अव्यक्त इशारे

समस्या मुक्त, समाधान स्वरूप बनो और बनाओ

1) बापदादा की एक ही आशा है कि अब कारण खत्म हो, निवारण ही दिखाई दे। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे, इसलिए किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो। अब पुरानी भाषा, पुरानी चाल, अलबेलेपन की, कडुवेपन की भाषा परिवर्तन कर समाधान स्वरूप बनो।

2) जितना अनुभवी मूर्त बनते जायेंगे उतना फाउन्डेशन पक्का होगा। फिर किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या खेल के समान अनुभव होगी। कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो कैसी भी समस्या में स्थिति एकरस रहेगी, हलचल नहीं होगी।

3) जैसे लौकिक जीवन में मां बच्चे को पालना द्वारा शक्तिशाली बनाती है, जिससे वह किसी भी समस्या का सामना कर सके। सदा तन्दुरुस्त रहे, सम्पत्तिवान रहे। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें जगत मां, बेहद की मां बन, हर एक को ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो वे अपने को विघ्न विनाशक, शक्ति सम्पन्न हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें।

4) जैसा समय, जैसी समस्यायें हो, जैसे व्यक्ति हों वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इज़ी रहो। परिस्थिति प्रमाण अपने नाम का, संस्कारों का, स्थूल साधनों का अगर त्याग भी करना पड़े, तो त्याग करके अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लो, सदा अपनी डबल लाइट स्थिति में रहो तो हर समस्या को सहज पार कर लेंगे।

5) यह युग उड़ती कला का युग है, ब्राह्मणों का कर्तव्य ही उड़ना और उड़ाना है। वास्तविक स्टेज भी उड़ती कला है। उड़ती कला वाला सेकण्ड में सर्व समस्यायें ऐसे पार करेगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उसे नीचे की कोई भी चीज़ डिस्टर्ब नहीं करेगी, रूकावट नहीं डालेगी।

6) सदा नयनों में, दिल में बाप को समाते हुए एक बाप दूसरा न कोई – इसी लगन में मगन रहो। तो आई हुई परीक्षाओं को, समस्याओं को, व्यर्थ संकल्पों को पानी पर लकीर के समान पार कर पास विद आनर बन जायेंगे।

7) सदा बाप के अटूट लगन में मगन रहते हुए आगे बढ़ते चलो, यह अटूट याद ही सर्व समस्याओं को समाप्त कर उड़ता पंछी बनाए उड़ती कला में ले जायेगी। बापदादा अभी सर्व बच्चों को मेहनत से मुक्त, समस्याओं से मुक्त बनाना चाहते हैं। आप मास्टर मुक्तिदाता बच्चे जब स्वयं सर्व समस्याओं से मुक्त बनेंगे तब अनेक आत्माओं को मुक्ति दिलाने के निमित्त बन सकेंगे।

8) "मैं मस्तकमणि हूँ", मस्तक में सदा बाप की याद रहे, इसी को ही ऊंची स्टेज कहा जाता है। इस ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाले नीचे की अनेक प्रकार की बातों को ऐसे पार कर लेते हैं जैसे कुछ है ही नहीं। इससे समस्यायें नीचे रह जायेंगी और आप ऊपर हो जायेंगे।

सदा सहजयोगी, सहज पुरुषार्थी, सहज प्राप्ति स्वरूप बनो, तो हिमालय पर्वत जितनी बड़ी समस्या को भी उड़ती कला के आधार पर सेकण्ड में पार कर लेंगे।

9) "आप और बाप" - इस कम्बाइन्ड रूप का अनुभव करते, सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ कर्म द्वारा विश्व कल्याणकारी स्वरूप का अनुभव करो तो सेकण्ड में सर्व समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। सदा एक स्लोगन याद रखना 'न समस्या बनेंगे न समस्या को देख डगमग होंगे, स्वयं भी समाधान स्वरूप रहेंगे और दूसरों को भी समाधान देंगे।" यह स्मृति सफलता स्वरूप बना देगी।

10) जो विजयी रत्न हैं वह किसी भी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहेंगे। दूसरे को उल्हना नहीं देंगे। समस्या के समय स्वराज्य अधिकारीपन की सीट पर रह समाधान स्वरूप बनेंगे।

11) हर घड़ी विश्व कल्याण प्रति समर्पित करो। जब हर संकल्प, हर सेकेण्ड सेवा मे बिजी रहेंगे, फुर्सत नहीं होगी, तो माया को भी आपके पास आने की फुर्सत नहीं होगी। समस्यायें समाधान के रूप में परिवर्तित हो जायेंगी। समाधान स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं के पास समस्या आने की हिम्मत नहीं रख सकती।

12) मन्सा-वाचा-कर्मणा निरन्तर दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वतः ही समाप्त हो जायेगा, अविनाशी लंगर लगाओ। पुराने संस्कार जो भिन्न-भिन्न रूप में समस्या बनकर आते हैं, उन्हें समाप्त करने के लिए अब शक्तिशाली संस्कार - दाता, विधाता, वरदाता के इमर्ज करो। यह महासंस्कार कमजोर संस्कार को स्वतः समाप्त कर देंगे। आप औरों को रास्ता दिखाने के, बाप का खजाना देने के निमित्त सहारा बनो तो कमजोरियों का किनारा स्वत: हो जायेगा।

13) जैसे स्नेह में सभी पास मार्क्स लेने वाले हो, ऐसे अब समाधान स्वरूप की माला तैयार करो। सम्पूर्ण बनना अर्थात् समाधान स्वरूप बनना। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा समस्याले आ वाला भी समस्या भूल जाता था। सम्पूर्ण स्थिति के आगे समस्यायें बचपन का खेल अनुभव होती हैं। तो फालो फादर कर अपनी तो सम्पूर्ण स्थिति में स्थित रहो।

14) मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे कोई भी समस्या आ नहीं सकती। जैसे हाथी के पांव के नीचे अगर चींटी आ जाए तो दिखाई देगी क्या? तो यह समस्यायें भी आप महारथियों के आगे चींटी समान हैं, इन्हें खेल और खिलौना समझो तो खुशी में रहेंगे, कितनी भी बड़ी बात छोटी हो जायेगी।

15) कोई भी खिटखिट का कारण होता है मैं, मेरा तू तेरा..। लेकिन बाप को सामने रखकर दिल से "मेरा बाबा" कहो तो कोई भी खिटखिट वा समस्या सहज समाप्त हो जायेगी। सदा निर्विघ्न बन तीव्र पुरुषार्थ से उड़ती - कला का अनुभव करते रहो तो बहुतकाल की निर्विघ्न स्थिति, मजबूत स्थिति सब मजबूरियों को सहज समाप्त कर देगी।

16) एक साक्षीपन, दूसरा त्रिकालदर्शी यह दोनों स्टेज महारथियों की होने के कारण कोई कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बड़े रूप की समस्या हो लेकिन अपनी स्टेज ऊंची होने के कारण वह बिल्कुल छोटी लगेगी। बड़ी बात अनुभव नहीं होगी और न विकराल अनुभव होगी।

17) जब स्वयं को अकालमूर्त आत्मा समझेंगे तब अकाले मृत्यु से, अकाल से, सर्व समस्याओं से बच सकेंगे। मानसिक चिन्तायें, मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन है - अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना। देह-अभिमान को मिटाने से सर्व परिस्थितियाँ स्वत: मिट जायेंगी।

18) अपने संकल्पों के तूफान वा कोई भी सम्बन्ध द्वारा, प्रकृति वा समस्याओं द्वारा तूफान व विघ्न आते हैं तो उनसे मुक्ति पाने के लिए योग युक्त, युक्ति-युक्त बनो। जब तक योगयुक्त नहीं तब तक विघ्नों से युक्त हो। योगयुक्त आत्मायें तूफान को भी तोहफा बना देती है।

19) प्रतिज्ञा करो कि कैसी भी समस्या आये, कोई भी कारण बने लेकिन हम और कोई पर भी बलि नहीं चढ़ेंगे। जैसे बीज बोने के बाद उसको जल दिया जाता है तब वृक्ष रूप में फलीभूत होता है। इस रीति यह भी जो प्रतिज्ञा की है उसको पूर्ण करने के लिए संग का जल भी चाहिए तो अपनी हिम्मत भी चाहिए।

20) जब बाप का स्नेह स्मृति में रहेगा तो सर्वशक्तिमान के स्नेह के आगे समस्या क्या है ! कहाँ वह स्नेह और कहाँ समस्या ! वह राई वह पहाड़, इतना फर्क है। तो अनादि रत्न बनने के लिए सर्वशक्तिमान की शक्ति और स्नेह को सदैव साथ रखना है। अपने को अकेला कभी भी नहीं समझो। साथी के बिना जीवन का एक सेकेण्ड भी न हो।

21) सर्व खजानों की बचत करने के लिए सहनशील बनो। सहनशील श्रेष्ठ आत्मा सदा ज्ञान योग के सार में स्थित हो विस्तार को, समस्या को, विघ्नों को सार में ले आती है। जैसे लम्बा रास्ता पार करने में समय, शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। अर्थात् ज्यादा यूज़ होती हैं। ऐसे विस्तार है लम्बा रास्ता पार करना और सार है शार्टकट रास्ता पार करना। पार दोनों ही करते हैं लेकिन शार्टकट करने वाले समय और शक्तियों की बचत होने कारण निराश व दिलशिकस्त नहीं होते, सदा मौज में मुस्कराते पार करते हैं।

22) निर्माणचित आत्मायें कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनायेंगी। वह किसी भी प्रकार के विघ्न व समस्या अथवा माया के वार को वार न समझ, खेल के समान अनुभव करते खुशी-खुशी पार कर लेंगे, उनकी अवस्था सदा एकरस रहेगी। कभी घबरायेंगे नहीं, हलचल में भी नहीं आयेंगे।

23) समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखो लेकिन लॉ में भी लव महसूस हो, इसके लिए आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो तब हर समस्या को हल करने में सहयोगी बन सकेंगे। शिक्षा के साथ सहयोग देना ही आत्मिक प्यार की मूर्ति बनना है।

24) जैसे गायन है कि पाण्डव अन्त समय में ऊंची पहाड़ी पर गल गए अर्थात् स्वयं देह - अभिमान व दुःख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो गये। ऐसे आप बच्चे अपनी ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो तो सभी समस्यायें समाधान स्वरूप में परिवर्तित हो जायेंगी। क्या होगा, कैसे होगा, हमारा क्या होगा.... ऐसे किसी भी प्रकार के प्रश्नों की हलचल नहीं होगी। ऐसी स्थिति में रहने वाले विजयी रत्न बन जाते हैं।

25) दिन-प्रतिदिन समस्याएं तो बढ़नी ही हैं, लेकिन उसमें अपनी स्थिति इतनी पावरफुल हो जो परिस्थितियां स्थिति से बदल जायें। परिस्थिति के आधार पर स्थिति न हो। स्थिति परिस्थिति को बदल सकती है क्योंकि सर्वशक्तिमान की संतान हो। रचयिता के बच्चे रचना के अधीन कैसे होंगे। अधिकार रखना है न कि अधीन होना है। जितना अधिकार रखेंगे उतना परिस्थितियां भी बदल जायेंगी।

26) साइलेन्स की शक्ति द्वारा परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाओ। निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर दो। माया कितने भी प्रकार की समस्या के रूप में आये लेकिन आप परिवर्तन की शक्ति से, साइलेन्स की शक्ति से समस्या को समाधान स्वरूप बना दो। कारण को निवारण रूप में बदल दो। यह परिवर्तन शक्ति आप बच्चों को बाप द्वारा वर्से में मिली है। परिवर्तन की शक्ति वालों को बापदादा अमर भव का वरदान दे रहे हैं।

27) जो बच्चे सदा उमंग - उत्साह में रहते हैं, उनके सामने कोई भी समस्या ठहर नहीं सकती। उमंग-उत्साह वाले कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते, सदा दिल खुश। उमंग-उत्साह तूफ़ान को तोहफ़ा, पहाड़ को रुई बना देता है। उत्साह किसी भी परीक्षा वा समस्या को मनोरंजन अनुभव कराता है इसलिये कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिये।

28) अब अपना समय बेहद की सेवा में लगाओ तो समस्यायें सहज ही भाग जायेगी। समस्याओं के वशीभूत कमजोर आत्मा को शक्ति और गुणों का सहयोग दो, असमर्थ को समर्थी दो तो उनकी दुआयें आपके लिए लिफ्ट बन जायेंगी। सदा प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना – यह है दुआयें लेना और दुआयें देना। यह दुआयें सहज ही मायाजीत बना देंगी।

29) जो बच्चे परमात्म प्यार में सदा लवलीन, खोये हुए रहते हैं उनकी झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समस्या समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत हो नहीं सकती।

30) जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आये तो यही स्मृति में रहे कि मैं कम्बाइन्ड हूँ, तो घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। अपने सब बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं हल्के हो जाओ तो सदा अपने को खुशनसीब अनुभव करेंगे और फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे।